साहित्यसुधा

साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यकारों की रचना स्थली

वर्ष: 3, अंक 43, अगस्त(द्वितीय) , 2018

कांवड़ यात्रा:

श्रावणी कांवड यात्रा

स्वयं 'शिव' बनिए, शिव मिल जाएंगें

घनश्याम बादल

सावन आते ही शिवभक्त भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए देश के दूर दूर के भागों से हर साल श्रावण कृष्ण प्रतिपदा से कांवड़ लेकर निकल पड़े हैं और इस समय पूरा उत्तरी भारत कांवडियां के हर हर बम बम से गुंजायमान है ।

अद्भुत कांवड़ मेला:

बच्चे , बूढ़े , जवान , स्त्री , पुरुष हर तरह के कांवड़िए विभिन्न , वाहनों , गणवेषों , व मनोकामनाओं के साथ सारी सड़कों पर कब्जा कर , वातावरण को शिवमय कर रहे हंै । "हर हर बम - बम , जय शिव भोले चल भोले , हट भोले , बढ़ भोले ही " के नारे लगाते , कंधे पर कांवड़ टांगे गंगा जल लाकर कर शिव का अभिषेक करने के लक्ष्य के साथ लेकर पैदल और वाहनों से अपने इच्छित मंदिरांे , शिवालयों की ओर बढ़ रहे हैं । जहां सारा वातावरण शिवमय होकर भक्तिभाव से भरा है वहीं बहुत कुछ और भी है कुछ भक्ति के साथ जुड़ा है तो कुछ तर्क से ।

कांवड़ क्यों:

शिव को प्रसन्न करने के लिये श्रद्धापूर्वक कांवड लाने की परंपरा सदियों पुरानी है ! सृष्टि निर्माण से लेकर उसके विनाश तक शिव का विषेश महत्व माना गया है । यदि अंग्रेजी के शब्द "गॉड" में 'जी' सृष्टि के निर्माता ब्रहमा है , 'ओ' पालन कर्ता विष्णु है , तो 'डी' यानि डेस्ट्रोयर है शिव । मिथकों अनुसार सृष्टि निर्माण से लेकर उसके विध्वंस तक शिव का अलग महत्व है । मान्यता है कि सृष्टि का निर्माण लोकहित के लिए ब्रहमा जी ने किया था और उसके पालन पोषण का जिम्मा विष्णु ने लिया जब तक सब ठीक चलता है सृष्टि चलती है , मगर जब उसमें सब कुछ अकल्याण्कारी हो जाए तो तो शिव सृष्टि के अंतिम हथियार हैं जिनका उपयोग तब ही होता है जब दूसरे सारे हथियार व्यर्थ हो जाएं क्योंकि सृष्टि का संहार प्रभु तब तक नहीं ही करते जब तक कि उसमें एक भी उपयोगी तत्व या अच्छाई रहती है । ऐसे ही शिव को मनाने का संकल्प पर्व बन कर आता है श्रावण का कांवड़ मेला हर साल ।

तन फिट , मन पावन:

कलिकाल बुराईयों के वर्चस्व का काल कहा जाता रहा है इसमें होने वाली कांवड़ यात्रा तन और मन में रमी बुराईयों के विनाश के लिये ही की जाती है । शिव भक्तों का मानना है कि जब तन और मन दोनों ही शुद्ध हो जाते हैं तब भोलेनाथ रीझते हैं । तर्क की दृष्टि से कांवड के बहाने से ही तन को फिटनेस मिलती है तो भावना की नज़र से व मन की अशुद्धियाँ दूर होकर पवित्र भाव आते हैं ।

कांवड़ कथाएं:

कांवड यात्रा की परम्परा भगवान शिव को रिझाने के लिये परशुराम जी की कठोर तपस्या से आंरभ हुई । बाद में भागीरथ ने भी अपने पुरखों के उद्धार

के लिए कठोर तप कर शिव को प्रसन्न किया । शिवजी के आश्वासन देने के बाद गंगा पृथ्वी पर आई और भागीरथ के चैस्ठ हजार शापित पुरखों का उद्धार हुआ । तब से ही गंगा का जल भक्त लोग कांवड़ के माध्यम से अपने घरों व मंदिरों में चढ़ाने लगे ।

एक अन्य कथा के अनुसार समुद्र मंथन के समय शिव ने सारा जहर स्वयं पी कर देवता व राक्षसों का विवाद समाप्त किया और ब्रहमांड को भी जहर के प्रभाव से मुक्त किया । शिव ने जहर से औरों को तो बचा लिया पर कंठ में अटके इसके के प्रभाव से वे स्वयं बेहोश हो गए । तब देवताओं ने शिव का उपचार उन पर जल , दूध , शहद आदि डालते हुए किया । उससे शिव स्वस्थ हो गये तभी से शिव को प्रसन्न करने के लिए कांवड़ लाने, शिव पर इन चीजों का अर्ध्य चढ़ाने का प्रचलन हुआ।

पुर्ननिर्माण के देव शिव:

मान्यता है कि शिव उपासक की सही-गलत भावना जाने बिना ही बड़ी आसानी से प्रसन्न हो जाते है । तभी तो वे रावण और भस्मासुर जैसों को भी वरदान दे देते हैं जो शिव का ही अनिष्ट करने चल पड़ते हैं । पर शिव अपनी पर आते हैं तो तीसरा नेत्र भी खोलने से नहीं हिचकते पर अपने लिए उन्हाने ऐसा कभी किया नहीं । मगर जब भक्तों की कातर पुकार शिव तक पंहुचती हैं तो फिर वे इन विनाशकारी तत्वों का संहार भी करने में नहीं हिचकिचाते हैं । वस्तुतः शिव विनाश के ही नहीं वरन् पुनर्निर्माण के लिये परिस्थितियों का सृजन करने वाले देवता भी कहे जा सकते हैं ।

सर्वहितकारी भी शिव:

स्वयं वीराने में वास करते शिव अपने भक्तों की झोलियां भरने में देर नहीं लगाते । वें स्वयं अर्द्धनग्न रह कर दुनिया को अपने रक्षा कवच की सुरक्षा देते हैं , कामभाव से पूरी तरह मुक्त होकर सब हरा - भरा रखते हैं , शिव देव दानव, मानव सबका हित करते हैं । श्रावण में शिव की पूजा के पीछे एक कथा है कि श्रावण के महीने में सती ने पार्वती के रूप में अवतरित हो शिव को प्रसन्न कर उन्हे पति के रूप में पाया । इसलिए श्रावण मास में तो शिव पूजा का महत्व और भी अधिक है । धारणा है कि श्रावण मास में कांवड़ से शिव की उपासना होती है और भोले भंडारी खुश होकरी सारी मनोकामनायें पूर्ण करते हैं ।

पावनता नही तो मोक्ष नहीं:

भक्ति योग में कांवडयात्रा अंतिम मोक्ष का निमित्त मानी जाती है और मोक्ष पावनता के बगैर नहीं मिलता तन - मन और आत्मा , कर्म और चिंतन सब पवित्र होने ज़रुरी माने गए हैं मोक्ष हेतु । पर आजकल इन कांवड़ यात्राओं में भी अपवित्र चीजों का समावेश हो गया है ।

न खानपान शुद्ध रहा न विचार , परकातरता बची न दूसरों को कष्ट न होने देने का भाव । चरस गांजा , भांग, शराब व अफीम आदि नशीले पदार्थों का सेवन व बिक्री इन दिनों बेहद बढ़ जाती है, जो कांवड़ की पावनता पर एक प्रश्नचिन्ह खड़ा करती है । इकट्ठे होकर चलते कांवड़िए यातायात बाधित कर असंख्य लोगों की असुविधा का कारण बनते हैं । ध्यान रहे , किसी भी हाल में आपकी कांवड़ यात्रा किसी के कष्ट का कारण न बने।

क्या करें कांवड़िए :

शिव यूं तो आसानी से रीझने वाले देव हैं पर उन्हे मन के सरल सीधे भक्त अधिक भाते हैं । इसलिए कांवड़ लाने व ले जाने वाले भक्तों को चाहिए कि वे इस दौरान अपने तन व मन दोनों को ही पवित्र रखें । मन में पवित्र विचार व भाव ही रखें, सब का भला करें व सोचें । केवल सात्विक भोजन करें , स्त्री , बच्चों व असहायों की भरपूर मदद करें । किसी से अपनी सेवा करवाने की बजाय सेवा करें । दान दें, गरीबों की मदद करें और कांवड़ की पवित्रता का पूरा ध्यान रखें । यदि गंगा या दूसरी नदी से जल ला रहे हैं तो उसकी पवित्रता को किसी भी तरह से बिगाड़ें नहीं ।

स्वयं बनें शिव :

शिव का मतलब है सात्विक व कल्याणकारी । अतः किसी का बुरा न करें न सोचें । कांवड़ को मस्ती , मनोरंजन या ऐश का साधन न बनाएं । नशा न करें, सड़क पर हो हुल्लड़ न करें । यातायात को बाधित न करें किसी को भी किसी भी तरह से दुख न दें । स्त्री गमन न करें। अश्लील बातें व भडकाऊ काम न करें । परस्त्री गमन की तो सोचें भी नहीं । कांवड़ को जमान पर न रखें व निरंतर शोर व प्रदूषण फैलाते वाहनों की बजाय पैदल चलने का प्रयास करें । स्वयं बीमार हों तो कांवड़ लाकर स्वयं का जीवन संकट में न डालें । और कोई दूसरा बीमार मिले तो उसकी मदद करें क्योंकि आप दूसरों के लिए शिव यानि कल्याणकारी बनेंगें तभी तो शिव आपका भी कल्याण करेंगें ।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें